चिश्ती सम्प्रदाय व उसके प्रमुख संत

मनजीत

षोधार्थी रू एम.फिल

इतिहास विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, हरियाणा

manjitomparkash@gmail.com

षोध आलेख सार

मध्यकाल में सूफीमत एक प्रभावषाली आंदोलन के रूप में उभरा। यद्यपि सूफीमत इस्लाम से ही संबंधित था किन्तु यह इस्लाम में आई कट्टरता के विरूद्ध था। सूफी बहुत खुले विचारों वाले थे। उन्होंने रूढिवादी परिभाषाओं तथा धर्माचार्यों द्वारा की गई कुरान एवं सुन्ना की बौद्धिक व्याख्या की कटु आलोचना की। सूफियों ने मुक्ति प्राप्ति के लिए परमात्मा की भक्ति एवं उसके आदेषों की पालना पर बल दिया। उन्होंने पैगम्बर मुहम्मद को इंसान–ए–कामिल बताया तथा उनकी षिक्षाओं पर चलने की अपील की। उन्होंने कुरान की व्याख्या अपने निजी अनुभवों के आधार पर की। सूफी मानव सेवा को अपना परम आदर्ष मानते थे।

प्रारम्भिक समय के मुस्लिम व्यक्ति जो धर्म आस्था रखते थे। बहुधा अल्लाह की दण्ड व्यवस्था से सदा से ही भयभीत रहते थे । वे लोग संसार प्रपंचों से बचने के लिए अल्लाह की उपासन करते थे। ऐसे धार्मिक व्यक्ति कभी–कभी एक मण्डली बनाकर भ्रमण किया करते थे और कहीं–कहीं ठहर जाया करते थे। इस प्रकार मठ तथा आश्रम बनने लगे। इन भ्रमणषील मण्डलीयों को उस समय 'अत्तरीक' अर्थात् पंथ कहा जाने लगा। बाद में ये ही पंथ सम्प्रदाय कहे जाने लगे।

सूफियों के अनेक सम्प्रदायों ने अपने –अपने ग्रंथों का मूल स्रोत स्वयं हजरत मुहम्मद अथवा उनके प्राचीन खलीफाओं तक सिद्ध करने की चेष्टा की है और सूफी मत को ही इस प्रकार मूल इस्लाम धर्म का वास्तविक रूप ठहराया है। इन खलीफाओं में भी हजरत अली कदाचित सबसे अधिक अपनाये गये हैं और सूफियों के कम से कम तीन सम्प्रदायों ने इन्हें अपना आदि गुरू स्वीकार किया[1]। भारत में सूफी सम्प्रदाय भारत में हिन्दू और मुसलमानों में सौहार्द व प्रेम बढाने का श्रेय सूफी सन्तों को ही है। इन्होंने उनके धर्म–दर्षन के समन्वय में अपूर्व योगदान दिया है। यहाँ पर सूफी मत जहां भारतीय वेदांत से प्रभावित हुआ है वहीं पर अनेक भारतीय भक्त विचारक व सम्प्रदाय भी सूफी दर्षन से प्रभावित हुए हैं।

भारत में सूफियों का आगमन काफी पहले से ही हो गया था किन्तु एक सम्प्रदाय के रूप में सूफीमत का प्रवेष तत्पष्चात् ही हुआ। सूफीमत का क्रमिक विकास होता रहा और धीरे–धीरे सूफियों में

भिन्न–भिन्न सम्प्रदायों और उपसम्प्रदायों की स्थापना होने लगी। ये सम्प्रदाय धीरे–धीरे अन्य देषों में भी विकसित हो गये। इन सम्प्रदायों का नामकरण ज्यादातर सूफी साधकों के नाम पर ही हुआ। इन सम्प्रदायों को सिलसिले के नाम से भी जाना जाता है जिनका विकसित रूप हमें ईसा की 12वीं शताब्दी के आस–पास देखने को मिलता है।

सूफी सम्प्रदायों की संख्या के बारे में निष्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। इनकी संख्या के बारे में काफी मतभेद हैं वैसे इनकी संख्या 175 तक मानी जाती है। आईने–अकबरी के अनुसार सम्राट अकबर के समय में भारत के अन्तर्गत चौदह सूफी सम्प्रदाय प्रचलित थे–चिष्ती, सुहरावर्दी, हबीजी, तफुरी, करर्वी,सफवी, जुनेदी, काजरूनी, तूसी, फिरदौसी, जैदी, इमादी, अधमी, और हुवेरी। अलहुज्विरी ने अपने ग्रंथ में 12 सूफी सम्प्रदायों का उल्लेख किया है किन्तु भारत में विषेष रूप से प्रसिद्ध होने वाले चार सम्प्रदाय प्रमुख हैं–चिष्ती, सुहरावर्दी, कादरी और नक्षबन्दी[2]

मुख्य षब्द रू चिष्ती सम्प्रदाय, औलिया, साबिरी

चिष्ती सम्प्रदायः

भारत में आकर प्रचार–प्रसार करने वाले सूफी सम्प्रदायों में सबसे प्रसिद्ध चिष्ती सम्प्रदाय है। इस सम्प्रदाय के संस्थापक ख्वाजा अबू इषाक षामी चिष्ती माने जाते हैं जिनका संबंध अली से लगाया जाता है। इस सम्प्रदाय का भारत में आगमन अल हुज्विरी के बाद हुआ। 'ख्वाजा अहमद अब्दुल चिष्ती मृत्यु सन् 966 ई0 में हुई थी और उन्हीं की सातवीं पीढी में प्रसिद्ध ख्वाजा मुईनुद्दीन चिष्ती अजमेरी का प्रचार सर्वप्रथम भारतवर्ष में किया था[3]। इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक अबू इषाक षामी को माना जाता है परन्तु भारत में इस सम्प्रदाय के वास्तविक प्रवर्तक ख्वाजा मुईनुद्दीन चिष्ती को माना जाता है। ये चिष्ती सम्प्रदाय के षेख अब्दुल कादिर के षिष्य थे। ये 1190 में भारत आये। 1192 में षहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी की सेना के साथ दिल्ली आये थे उसके बाद 1195 में राजस्थान के अजमेर में स्थाई निवास करने लगे। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिष्ती का जन्म 1142 ई0 में सीरूतान अफगानिस्तान में हुआ। ये बचपन से ही ईश्वर भक्ति में अनुरक्त थे। भारत में अजमेर से ही इन्होंने अपना प्रचार–प्रसार किया। इनका विष्वास था कि विष्व के समस्त धर्मों का मूल स्रोत एक है ईष्वर एक है धर्म उसको प्राप्ति का साधन मात्र है। 1236 ई0 में इनका देहान्त हो गया[5]। सूफी साधकों में इन्हें बडी श्रद्धा और सम्मान मिला जिसके कारण इन्हें आफताबे–हिन्दू कहा जाता है। हिन्दू और मुसलमान दोनों पर ही मुईनुद्दीन चिष्ती के विचारों का समान प्रभाव पड़ा। अजमेर में इनकी दरगाह है जिसको चिषतियों के मक्का के नाम से जानते हैं[6]। इनकी दरगाह पर प्रतिवर्ष मेले लगते हैं जिसमें हिन्दू और मुस्लिम सभी सम्मिलित होते हैं।

इस सम्प्रदाय के भारत में प्रथम प्रवर्तक ख्वाजा मुईनुद्दीन थे तो इस सम्प्रदाय के दूसरे संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियारर काकी हुए जो खवाजा मुईनुद्दीन चिष्ती के साथ बगदाद से भारत आये

थे। ये रास्ते में कुछ दिन मुल्तान में रहकर फिर दिल्ली पहुंचे थे। उस समय इल्तुतमिष दिल्ली का सुल्तान था। सुल्तान द्वारा इनका भव्य स्वागत किया गया था। इल्तुतमिष ने उन्हें अपने निवास के समीप ही रहने के लिए अनुरोध किया था किन्तु उन्होंने इस अनुरोध को अस्वीकार कर दिया था[7]।

ख्वाजा बख्तियार काकी 'रोटियां वाला' के नाम से काफी प्रसिद्ध हुए[8]। इनकी मृत्यु1237 में दिल्ली में हुई थी। इनकी कब्र कुतुबमीनार के पास स्थित है। इनके बारे में कहा जाता है कि ये पैगम्बर के वंष के थे। हजरत अली के बेटे हुसैन से वे 16वीं पीढी में आते थे। कहा जाता है कि उन्होंने षिहाबुद्दीन सुहरावर्दी से भी षिक्षा ग्रहण की थी। बाद में ये मुईनुद्दीन चिष्ती के सम्पर्क में आये और मुरीद बन गये। वे मुईनुद्दीन की अनुमति पर दिल्ली में ही बस गये[9]। दिल्ली में कुतुबुद्दीन बड़े ही लोकप्रिय हुए। ख्वाजा कुतुबुद्दीन के उत्तराधिकारी उनके एक प्रमुख षिष्य फरीदुद्दीन मसउद षंकरगज हुए।

फरीदुद्दीन मसउद षंकरगंज वाक फरीद के नाम से प्रख्यात हुए। वे एकान्त प्रेमी थे। बाबा फरीद सतलुज नदी के तट पर बनी कुटी में रहने लगे थे जो फरीद कुटी के नाम से विख्यात हुई। उन्होंने बहाउद्दीन जकारिया से षिक्षा ग्रहण की थी पर अपनी साधना के लिए उन्हें गुरू नहीं बनाया[10]। जब कुतुबुद्दीन कुछ दिनों के लिए मुल्तान आये तब फरीदुद्दीन उनके सम्पर्क में आये। फरीदुद्दीन ने उनसे प्रभावित होकर उनका षिष्यत्व ग्रहण कर लिया। अपने गुरू के साथ फरीद दिल्ली आ गए। इस समय उनकी उम्र 17वर्ष थी। दिल्ली की भीड़–भाड़ देख फरीद गुरू की आज्ञा से हांसी चले आए। हांसी में भी भीड़ एकत्र होने लगी। अतः हांसी छोड़कर फरीद अयोध्या आ गए। यहाँ पर वे काफी दिनों तक रहे। बाबा फरीद का जन्म मुल्तान के कठवाल कस्बे में हुआ था। इन्होंने अपने जीवन के अन्तिम 16 वर्ष मुल्तान के कठवाल में ही बिताये। 1266 में इनकी मृत्यु पाकपत्तन (पंजाब) में हो गई। उनकी मजार पर मुहर्रम की 5वीं तारीख का उर्सलगता है।

बाबा फरीद के दो प्रमुख षिष्य थे–निजामुद्दीन औलिया व मखदूम अलाउद्दीन अली अहमद साविर थे[11]। निजामुद्दीन का वास्तविक नाम मुहम्मद विन अहमद बिन दनियाल अल बुखारी था। इनका जन्म बदायूं में 1238 में हुआ था और मृत्यु दिल्ली में 1325 ई0 में हुई थी। बाबा फरीद की ख्याति सुनकर निजामुद्दीन उनसे अयोध्या में मिले और उनका षिष्यत्व ग्रहण किया। निजामुद्दीन से बाबा फरीद इतने प्रभावित हुए कि उन्हें मात्र 20 वर्ष की उम्र में ही अपना रंगलीला चुन दिल्ली भेज दिया। दिल्ली में निजामुद्दीन स्थाई निवास करने लगे। इन्होंने दिल्ली के सात सुल्तानों का काल देखा। हिन्दू–मुस्लिम दोनों इन्हें आदर की दृष्टि से देखते थे। इनका जनसाधारण पर अत्यधिक प्रभाव था। दूर–दूर से लोग उनके दर्षन करने के लिए आते थे। मलिक खुसरों उनके प्रमुख षिष्य थे। इनकी समाधि निजामुद्दीन दिल्ली में है जहां पर हजारों श्रद्धालु अपनी श्रद्धांजली अर्पित करने के लिए आते हैं। निजामुद्दीन औलिया के उत्तराधिकारी नासिरूद्दीन मुहम्मद थे। वे दिल्ली चिराग कहलाते थे। इनकी मृत्यु 1356 ई0 में हुई। इनके बाद अनेक सूफी सन्त हुए। इसी सम्प्रदाय में मुगलकाल में एक

प्रमुख सूफी सन्त षेख सलीम चिष्ती हुए। मुगलकालीन सूफी परम्पराओं में चिष्ती परम्परा का प्रमुख स्थानथा। बादषाह अकबर ने 1562 से 1579 के मध्य मुईनुद्दीन चिष्ती की दरगाह अजमेर षरीफ की दस बार यात्रा की। इसके अतिरिक्त अकबर ने षेख सलीम चिष्ती की दरगाह के समीप अपनी राजधानी बनाई।

षहजादा सलीम का जन्म षेख सलीम चिष्ती के घर में ही हुआ था। अकबर षेख का बडा सम्मान करता था। षेख सलीम चिष्ती की 1572 ई0 में मृत्यु हो गई। षेख सलीम चिष्ती के बाद प्रायः दो सौ वर्षों तक इस साम्राज्य की अवनति होती रही। 18वीं षदी के अंत में ख्वाजा नूर मुहम्मद किबलाहे आलम ने पंजाब व सिन्ध में इस सूफी सिलसिले को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया। तदुपरान्त चिष्ती सम्प्रदाय का स्वरूप लगभग पूर्णतः भारतीय हो गया।

इस सम्प्रदाय में संगीत की प्रधानता थी। साधक संगीत सुनते–सुनते शवाविष्टावस्था को प्राप्त हो जाता है। ख्वाजा मुईनुद्दीन का कहना था कि 'संगीत आत्मा का भोजन है[12]।'

साधक को 40 दिनों तक किसी मस्जिद या एकान्त स्थान में रहना पडता है। जिसे 'चिल्ल' कहते हैं। इस अवस्क्था में साधक बहुत ही कम भोजन करता है। सारा समयपरमात्मा के चिंतन में लगाता है। चिष्तिमा लोग सिर पर बडे–बडे केष रखते हैं औररंगीन वस्त्र धारण करते हैं। ये अली को परमात्मा तथा मुहम्मद को समकक्ष मानते हैं[13]।

चिष्ती सम्प्रदाय में चिल्ला का प्रचलन या इसमें साधक इल्लाल्लाहु षब्द जोर–जोर से उच्चारण करते हुए अपने षरीर के उपरी भाग को खुद हिलाता है। इस सम्प्रदाय में संगीत का बडा महत्व है।

'ग्लोसरी ऑफ पंजाब ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स' प्रथम खण्ड तथा जान ए0 सुभान की 'सूफिज्म' नामक पुस्तक में कुछ सूफी सन्तों की चर्चा की गई है। यहाँ पर चिष्तियों का वंष–वृक्ष कुछ प्रमुख साधकों तथा कुछ तीर्थ स्थानों का जिक्र मात्र करते हैं।

चिष्ती सम्प्रदाय का वंष–वृक्ष निम्नलिखित है –

अजमेर के सन्त ख्वाजा मुईनुद्दीन चिष्ती

ख्वाजा कुतुबुद्दीन दिल्ली

बाबा फरीद

मखदूम अलाउद्दीन अली अहमद साविर हजरत निजामुद्दीन औलिया औलिया सम्प्रदाय

साबीरी सम्प्रदाय के प्रवर्तक

नसीरूद्दीन मुहम्मद

पानीपत के षेख षम्सुद्दीन बुक्र

पानीपत के षाहे विलायत षाह जलालुद्दीन

रदौली यू0पी0 के षेख अब्दुल इक्क

षेख आरीफ साहिब

षेख मुहम्मद साहिब

षेख अब्दुल कुदइस साहिब, गंगोह के कुतब

थानेसर के षेख जलालुद्दीन

बल्ख अफगानिस्तान के षेख निजामुद्दीन

गंगोह यूपी के षेख अबू सईद

गंगोह के षेख मुहम्मद सादिक

गंगोह के दाउद साहिब

षाह अब्दुल मैआली हजरत मीरान सैयद षाहषीक, मीरान साहिब के नाम से प्रख्यात हैं जिनका मकबरा पटियाला राज्य के धुरम स्थान में है।

भारतवर्ष में चिष्ती सम्प्रदाय के बहुत से तीर्थ स्थान हैं। कुछ सन्तों की समाधियां इतनी लोकप्रिय हैं कि वहां मेले लगा करते हैं। इनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं –

1. कुतुब साहिब की समाधि इन्होंने अपनी कब्र पर कोई इमारत नहीं बनने दी। दिल्ली
2. ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया की समाधि– दिल्ली
3. बूष्अली षाह कलंदर –करनाल
4. ख्वाजा षम्सुद्दीन चिष्ती साबिरी –पानीपत
5. ज्लालुद्दीन कबीर –अल–औलिया –पानीपत
6. षाह लखी– अम्बाला
7. षाह षीक मीरान जी–ठसक
8. मीरान जी– थानेसर तहसील
9. षेख फरीदुद्दीन–पाकपत्तन
10. अमीर खुसरो –नयी दिल्ली
11. षाह नसीरूद्दीन–दिल्ली

12. मुहम्मद आरीफ–लाहौर

चिष्ती सम्प्रदाय की दो अन्य उपशाखायें–औलिया, साबिरी

औलिया :

बाबा फरीद के षिष्य ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया ने औलिया नामक एक स्वतंत्र सम्प्रदाय {जिसे निजामी भी कहा गया} का संगठन किया जिसका केन्द्र बदायूं बना। अमीर खुसरों ख्वाजाा निजामुद्दीन औलिया के ही षिष्य थे, जो बाद मे उच्च कोटि के कवि हुए। मलिक मुहम्मद जायसी की एक गुरू परम्परा चिष्तियां सम्प्रदाय का भी है जिसमें उसने सैयद अषरफ जहांगीर का नाम बड़े आदर के साथ लिया है[14]। उसमान के गुरू षाह निजाम भी इसी सम्प्रदाय के थे।

निजामुद्दीन औलिया षंकरगंज चिष्तीया के प्रधान षिष्य थे। इनका जन्म स्थान बदायूं माना जाता है। कवि खुसरों तथा अमीर हुसैन देहलवी इनके षिष्य थे। प्रसिद्ध इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी भी इन्हीं के षिष्य रहे। निजामुद्दीन औलिया के नाम पर निजामियां उपसम्प्रदाय चल पड़ा। निजामियां उपसम्प्रदाय में आगे चलकर फिर हिसामिया और हम षाही नाम की दो षाखायें प्रचलित हुई।

साबिरी:

बाबा फरीद के दूसरे षिष्य षेख अलाउत अली अहमद साबिरी ने चिष्तीयां सम्प्रदाय में साबिरी नामक एक नयी षाखा की स्थापना की। इस षाखा का प्रचार उस समय बहुत ही जोरों पर था। सम्प्रदाय में एक साबिरी चिष्तीया नाम का एक उपसम्प्रदाय चला इसका प्रचार क्षेत्र रूड़की के आसपास था।

संदर्भ सूची

1. सूफीमत–कन्हैया सिंह पृ0–20
2. हिन्दी सूफी काव्य में प्रकृति चित्रण–गायत्री पाठक
3. सूफी काव्य संग्रह–परषुराम चतुर्वेदी पृ0–37
4. मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति–प्रोफेसर राधेष्याम पृ0–271
5. मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति–प्रोफेसर राधेष्याम पृ0–271
6. सूफी काव्य संग्रह–परषुराम चतुर्वेदी पृ0–37
7. लाइफ एण्ड टाइम्स ऑफ षेख फरीदुदीन गजेषंकर–खामिद अहमद निजामी पृ0–20
8. मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति–प्रोफेसर राधेष्याम पृ0–272
9. मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति–प्रोफेसर राधेष्याम पृ0–272

10. मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति–प्रोफेसर राधेष्याम पृ0–272

11. मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति–प्रोफेसर राधेष्याम पृ0–272

12. विलियम क्रोके–हेरकलोटस इस्लाम इन इण्डिया 1921 पृ0–287

13. मध्यकालीन सूफी एवं सन्त साहित्य–डॉ0 मुक्तेष्वर तिवारी पृ0– 56–57

14. ग्लोरी ऑफ पंजाब ट्राइब्स एण्ड कास्ट सं0 1919 खण्ड –1 पृ0– 454–रामपूजनतिवारी